रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67 / 2018–20

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

# इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127 / 204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –40 ● अंक –22 ● कानपुर 16 से 30 नवम्बर 2018 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹100

# अधिकार पाने के लिये कहीं विचलित तो नहीं हो रहे

आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में एक बार फिर अधिकारों को लेकर घमासान है हर तरफ अधिकारों की ही चर्चा है लोग इसी में व्यस्त हैं कि किसके पास अधिकार है और किसके पास नहीं है ?कभी कभी तो चर्चायें इतनी गरम हो जाती हैं जो कि स्थिति को भद्र से अभद्रता तक ले जाती हैं।

प्रदेश का पूर्वांचल इलाका हो या पश्चिमी – हर तरफ अधिकारों को लेकर माहौल गरम है, हर संचालक अपने आप को अधिकार सम्पन्न बताता है और हमारा चिकित्सक भी इतना चतुर हो चुका है कि वह अपने आपसे ज़्यादा किसी को समझदार नहीं समझता। परिणाम यह है कि एक नई अराजकता जन्म ले रही है यह सारे के सारे दृश्य एक नये परिदृश्य की संरचना कर रहे हैं और जब इन सारे परिदृश्यों को मिलाकर आने वाले भविष्य की कल्पना की जाती है तो बहुत ज़्यादा आशा बलवती नहीं होती है ! समाज का नियम है कि वह परिवर्तन के साथ चलता है परिवर्तन प्रकृति करे तो कोई बात नहीं लेकिन जब परिवर्तन की दिशा अपने बदल दें तो मन सोचने को विवश हो जाता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अभी तक कार्य करने के लिए वातावरण अच्छा है शासकीय सोच भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ है सरकार का सहयोग और समर्थन लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथों को मिल रहा है, फिर ऐसी कौन सी नई स्थिति पैदा हो जाती है जो हमारे साथी विचलित हो जाते हैं और विचलन भी इस तरह का होता है जिससे कि वह कुछ ऐसा कर डालते हैं जिससे कि नई परिस्थितियां जन्म ले लेती हैं। आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबसे महत्वपूर्ण विषय है चिकित्सकों के पंजीयन का।

प्रदेश में वर्तमान लागू व्यवस्था के अनुसार चिकित्सकों को चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए अपने पंजीयन का आवेदन करना होता है पहली व्यवस्था के अनुसार सभी अधिकारी चिकित्सकों का पंजीयन जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में हुआ करता था इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक भी अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी के यहां प्रेषित कर देते थे, यह अलग बात है कि अलग–अलग ज़िलो में मुख्य चिकित्साधिकारी अलग–अलग रवैया अपनाते रहे हैं लेकिन अगस्त 2016 में पंजीयन की व्यवस्था में परिवर्तन हुआ परिवर्तित व्यवस्था के अनुसार आयुर्वेद एवं युनानी चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों का पंजीयन क्षेत्रीय आयुर्वेदिक अधि– कारी कार्यालय में होगा, होम्यो पैथिक चिकित्सकों का पंजीयन ज़िला होम्यो पैथिक चिकित्साधिकारी कार्यालय में होना है।

- आपके पास पर्याप्त अधिकार है
- पहले अपने अधिकारों का प्रयोग करना समझें
- कार्यों को दें प्रथम प्राथमिकता व प्रमुखता
- आपनी ऊर्जा का करें सही प्रयोग
- कार्य करने से ही इच्छाओं की पूर्ति होगी
- चुनाव के पहले परिस्थितियां बदलने की आशा

मात्र एलोपैथिक चिकित्सकों का पंजीयन मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में होता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के लिए सरकार द्वारा न तो कोई पृथक व्यवस्था की गयी है और न ही कोई पंजीयन से सम्बन्धित स्पष्ट निर्देश निर्गत किये गये हैं ऐसी स्थिति में सिर्फ एक ही रास्ता बचता है कि जब तक सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के लिए कोई पृथक व्यवस्था नहीं की जाती है अथवा किसी विभाग को स्पष्ट निर्देश नहीं दिये जाते हैं तब तक ज़िले के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों को पंजीयन का आवेदन प्रस्तुत करना चाहिये यह इसलिए आवश्यक है कि जांच के समय कोई भी अधिकारी आप पर यह आरोप न लगा सके कि आपने प्रचलित व्यवस्था का अनुपालन नहीं किया है इसलिए आप चिकित्सा व्यवसाय के अधिकारी नहीं हैं, यदि आपने पंजीयन हेतु आवेदन प्रस्तुत कर रखा है तो आप जांच अधिकारी से आंख मिलाकर बात कर सकते हैं और प्राप्त अधिकारों के बारे में उस अधिकारी को बता भी सकते हैं, जिससे कि आपकी अपनी प्रैक्टिस की वैधानिकता और अधिकारिता की प्रमाणिकता प्रस्तुत हो जाती है।

इन्हीं सब विषयों को लेकर हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक नेताओं के मध्य मतयेक्ता नहीं है वह एक दूसरे के विरूद्ध टिप्पणी करने से भी बाज़ नहीं आते हैं इस तरह के कार्यों से हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के मन में भ्रम की स्थिति पैदा होती है और भ्रमित व्यक्ति कभी भी सकारात्मक निर्णय लेने में सक्षम नहीं हो पाता, परिणाम यह होता है कि हमारे अधिकांश चिकित्सक अनिर्णय में पड़े रहते हैं अधिकार होते हुए भी ऐसी कार्ययोजना तैयार करें अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं।

कदाचित ऐसी स्थिति का यदि जन्म न हो तो ही अच्छा है और यदि परिस्थितियों वश जन्म हो ही जाता है तो उनका शीघ्र शमन होना भी अति आवश्यक है, शमन की आवश्यकता इसलिए है कि जब कोई विषय बहुत लम्बे समय तक अनिर्णित रहता है तो लोगों का विश्वास उठने लगता है। डगमगाये विश्वास वाला व्यक्ति कभी भी अपेक्षित परिणाम नहीं देता क्योंकि उसकी मनःस्थिति स्थिर ही नहीं रह पाती।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को यदि बहुत दूर तक आगे ले जाना है तो यह सभी ज़िम्मेदारों का दायित्व है कि कोई जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज में फैली भ्रांतियां दूर हो सकें, अधिकारिता और अनाधिकारिता पर चर्चायें बन्द हों, कार्य करने की प्रवृत्ति का पुनर्जागरण करना होगा तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास सम्भव हो पायेगा।

जब विकास की बात चलती है तो यह बात आती है कि क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास नहीं हो रहा है ?तो यदि विचार करें तो सब कुछ स्पष्ट हो जाता है किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास का आंकलन उस चिकित्सा पद्धति के जनप्रयोग पर आधारित होता है दूसरा उसकी शिक्षण व्यवस्था पर, विकास में निरन्तरता बनी रहे इसके लिए अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य होते रहने चाहिये चूंकि अनुसंधान ही हमें नवीनता से परिचय कराता है।

शेष पेज 3 पर

## पडरौना कुशीनगर में निःशुल्क चिकित्सा शिविर सम्पन्न

अल–लमरह ट्रस्ट द्वारा संचालित कुशीनगर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक स्टडी सेन्टर द्वारा 2 द्विवसीय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया शिविर में लगभग 112 रोगियों की जाँच की गयी एवं उन्हें आवश्यकतानुसार औषधियां भी वितरित की गयीं, शिविर में मुख्य चिकित्सक की भूमिका एयरफोर्स के रिटायर्ड एवं बैंगलोर से आये वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक डा0 पी0 आर0 धूसिया ने निभायी, इस अवसर पर डा0 धूसिया ने पत्रकारों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गुणवत्ता व उपयोगिता के बारे में भी विस्तार से बताया।

शिविर में अज़हरी हॉस्पिटल के डाक्टर आदिल एम0 खान रज़वी, लेडी डा0 शामिया, डा0 शहिदा, डा0 साजिद अली, डा0 सिराजउद्दीन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई सेन्टर के छात्र सरताज आलम ने भी सहभागिता की, डा0 आदिल एम0 खान ने बताया कि अज़हरी हॉस्पिटल व आयुवेर्दिक रिसर्च सेन्टर पर आयूवेर्दिक नुस्खों के साथ–साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक पद्धति से भी इलाज शुरु हो चुका है।

डा0 पी0 आर0 धूसिया पडरौना कुशी नगर के निःशुल्क कैम्प में रोगियों की जाँच के साथ–साथ फेशर्स को भी जानकारी देते हुये — छाया गज़ट

अगला शिविर सलेमपुर जनपद देवरिया में शिविर से सम्बंधित फोटो देखें पेज 3 पर

# अपना रास्ता स्वयं बनायें

सोचकर मन में तरह–तरह की शंकायें जन्म लेने लगती हैं और भय भी लगने लगता है, शंकाओं का जन्म लेना और भय का लगना इलेक्ट्रो होम्योपैथी में स्वभाविक सी बात है क्योंकि जबसे हमने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में कदम रखा है तबसे तरह–तरह के तूफानों का सामना करना पड़ा है। यह अलग बात है कि अभीतक कोई भी ऐसा तूफान नहीं आया जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समाप्त करने में सक्षम रहा हो ! हाँ तकलीफें ज़रुर दी हैं, नये–नये विवादों को जन्म दिया है परन्तु यह हम ही थे जिन्होंने हर बार गिरकर उठना सीखा है, परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हों हमें परिस्थितियों की दिशा मोड़ना आता है लेकिन दिशायें मोड़ते–मोड़ते दिशाहीन होने का भय भी सताता रहता है, क्योकि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन को सफल बनाने के लिये एक निश्चित दिशा का होना बहुत ही आवश्यक है आज के परिदृष्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में ज़बरदस्त कार्य की आवश्यकता है क्योंकि यही एक मात्र ऐसा रास्ता बचा है जिसपर चलते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित किया जा सकता है कुछ लोग काम करने के विषय पर तर्क देते हैं कि कार्य कैसे किया जाये ?ऐसे लोगों के लिये समझने के लिये यह एक आसान तरीका है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति की उपयोगिता ही उसकी सार्थकता को सिद्ध करती है हम लोग बात–बात पर एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति का उदाहरण देते हैं कि यह पद्धति कितनी कारगर है इसके डाक्टर कितने सम्पन्न होते हैं हर ओर मान सम्मान मिलता है यह सारी बातें कहने व सुनने में तो बहुत अच्छी लगती हैं परन्तु हकीकत में हम केवल सिक्के का एक ही पहलू देखते हैं और वह है सिक्के की चमक, हमको यहाँ पर यह भी सोचना चाहिये कि इस चमक को पाने के लिये कितना प्रयास और कष्ट झेला गया होगा !

जिस समय एलोपैथी स्थापित होने का प्रयास कर रही थी उस समय पूरे देश में आयुर्वेद का बोल–बाला था वैद्यों का सर्वत्र सम्मान था लेकिन एलोपैथ के समर्थकों ने इस कदर मेहनत की आयुर्वेद को ही किनारे कर दिया, ठीक इसी प्रकार हम सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथों को चाहिये कि हम सब भी मिलकर कोई ऐसा कार्य करें जिससे कि किसी पद्धति को तो हमें किनारे नहीं करना है लेकिन हम अपनी सार्थकता तो सिद्ध कर ही दें। हमारे सारे आन्दोलन और सारी गतिविधियां तभी सार्थक होंगी जब हमारा कार्य सर चढ़कर बोलेगा, सम्मान तो व्यक्ति का नहीं अपितु उसके द्वारा किये गये कार्यों का होता है। अस्तु हम सबका यह नैतिक दायित्व है कि हम सब मिलकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये सार्थक सामूहिक ऐसे कार्य करें जिससे कि शीघ्र से शीघ्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी के स्थापित होने का मार्ग प्रश्स्त हो सके। रास्ते तो कभी बन्द नहीं होते ! हाँ ढूँढने वाला चाहिये !! एक कहावत भी है कि जहाँ चाह वहीं राह, हमें जल के प्रवाह से सीख लेनी चाहिये, जल के प्रवाह को कोई रोक नहीं सकता अगर एक मार्ग अवरुद्ध किया जाता है तो दूसरी राह जल स्वयं ही बना लेता है। ठीक इसी प्रकार से हमारे पास भी कार्य करने के अनेकों अवसर हैं बस ज़रुरत इस बात की है कि सही समय पर उन अवसरों को हम प्रयोग में ला सकें, शान्ति से बैठना, निराश होकर बैठना, या जो मिल गया उतना ही ठीक है या फिर क्या फायदा काम करने से आगे तो कुछ हो नहीं सकता इस प्रकार के निरर्थक विचारों को मन से त्याग कर एक नये उत्साह के साथ कार्य में लगना होगा। कहते हैं समय चलायमान है और वह चलता रहेगा, समय चक्र को देखिये, समय इस तरह बदला कि एक समय में जहां ऐलोपैथी ने आयुर्वेद को किनारे लगा दिया था वही आयुर्वेद आज आयुष समूह के रुप में देश में विकसित हुयी और शीघ्र ही वही आयुर्वेद विश्व पटल पर स्थापित होने का प्रयास निरन्तर कर रही है। इसी प्रकार से यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथ अपने कार्य में लग जायें और कार्य पर ही अपनी दृष्टि गड़ा दें तो निसंदेह हम सफलता के जिस शिखर पर जाना चाहते हैं उस शिखर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पताका अवश्य गाड़ सकते हैं।

बड़े उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयास भी सघन और बड़े करने पड़ते हैं , कार्य में शिथिलता नहीं जोश के दर्शन हों।

# सपनों को साकार करने की सोचें

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सपनों से बहुत बड़ा सम्बन्ध है सपनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी शुरू होती है और जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जुड़े रहते हैं तब तक स्वप्नलोक में विचरण करते रहते हैं। हर माता पिता यह चाहता है कि उसका बालक या बालिका समाज में सम्मानजनक अपना स्थान बनाये समान्यतयः हर माता पिता का यह स्वप्न है कि उसका बच्चा डाक्टर या इंजीनियर बने इसके लिए वह प्रयास भी करता है, सफल हो जाये तो अच्छी बात है।

भारत वर्ष में यह आम बात है कि जो एलोपैथी का चिकित्सक बने वही डाक्टर है बाकी सब वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक हैं अन्य देशों की बात अलग है जहाँ बालक या बालिका अपनी क्षमता व इच्छानुसार अपने जीवन यापन के व्यवसाय का चयन करता है और उसी में सफल होकर श्रेष्ठता का प्रर्दशन करता है परन्तु भारतवर्ष में अभी भी अभिभावक की मर्ज़ी से ही व्यवसाय का चयन होता है। बालक या बालिका में प्रतिस्पर्धा पार करने की क्षमता हो या न हो पर अभिभावक यही चाहता है कि उसका बच्चा उसकी इच्छा का सम्मान करे और जो वह चाहता है उसी क्षेत्र में जाये।

जब नीट की परीक्षा पास नहीं कर पाता तब माता पिता अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपने बच्चे का प्रवेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी में करा देते हैं और यहीं से शुरू होती है सपनों की रंगीन दुनियाँ, माता पिता सपना देखते हैं कि उसका बच्चा चिकित्सक बन जायेगा और जो सपना पूरा करने वाला है बालक या बालिका वह अपने भविष्य के रंगीन सपने देखने लगता है कि तीन या चार वर्ष के बाद वह डाक्टर बनकर निकलेगा समाज में सम्मान अर्जित करेगा, प्रवेश लेते ही उसके सपनों में पंख लग जाते हैं वह स्वर्णिम भविष्य की अच्छी कल्पनाओं में खो जाता है, वह मन ही मन इतना प्रसन्न होता है कि अब वह अपनी सारी इच्छायें पूरी कर लेगा, आवश्यकताओं की वस्तुओं के साथ–साथ सुविधा भोगी वस्तुयें भी अपने लिए अर्जित कर लेगा, लेकिन धीरे–धीरे जैसे–जैसे समय बीतता है तब वह मान्यता के सपनों में खो जाता है। यह तो अच्छी बात है कि कुछ लोग यह स्पष्ट बता देते हैं कि अभी इस पद्धति को मान्यता नहीं है, कुछ ऐसे भी होते हैं जो पता नहीं क्या–क्या कह देते हैं ! और इसी क्या–क्या की उधेड़बुन में नव प्रवेशी जो पुराना हो चुका होता है काफी कुछ सपने देख चुका होता है आन्दोलन की राह पर चलता है रोज नई कल्पनायें बनती बिगड़ती हैं और इसी कल्पना लोक में विचरण करते हुए वह अपना कोर्स तक पूरा कर लेता है, अब उसके सामने दायित्व होता है कि वह अपने भविष्य का निर्माण कैसे करे ?इसी भविष्य के निर्माण के लिए वह सबकुछ कर देता है जो उसे नहीं करना चाहिये चिकित्सकीय चकाचौंध में फंसकर बहुत कुछ जल्दी जल्दी पाने की अपेक्षा में उसका रुझान एलोपैथी की तरफ हो जाता है, उसके इस रुझान से उसका तो भला हो जाता है परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला नहीं हो पाता। इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भले के लिए आवश्यकता है कि अधिक से अधिक संख्या में हमारे चिकित्सक अपनी ही विधा से चिकित्सा व्यवसाय करें और रोगियों को स्वस्थ्यता प्रदान करें इससे चिकित्सक को आत्म संतुष्टि का अनुभव होता है और वह अपनी पूरी क्षमता से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का समर्थक भी हो जाता है किसी एक चिकित्सक की प्रगति को देखकर उसके साथियों को भी यह प्रेरणा मिलती है कि वह भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के शुद्ध चिकित्सक बने। अपनी–अपनी विधा को अपनाकर भी सपने पूरे किये जा सकते हैं यह आवश्यक नही है कि सपनों को पूरा करने के लिए हम दूसरों के कन्धों का सहारा लें क्योंकि इस सत्य को हमें कभी नहीं भूलना चाहिये कि दूसरा कन्धा कितना भी मज़बूत क्यों न हो लेकिन वह जीवन भर का सहारा नहीं होता है।

आज के परिदृश्य में जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति बड़ी तेज़ी के साथ प्रगति के मार्ग पर है, जिस शासकीय संरक्षण की हम वर्षों से बाँट जोह रहे हैं, धीरे–धीरे हमारी इंतेज़ार करने की सीमा समाप्त होने जा रही है केन्द्र सरकार व प्रदेश सरकार द्वारा जो सकारात्मक रुख इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए दिखाया जा रहा है वह हमारी आशाओं को बल प्रदान करने वाला है। यह निर्विवाद सत्य है कि आगे बढ़ने के लिए कुछ सपने देखे जाते हैं और उन सपनों को पूरा करने के लिए कुछ लक्ष्य भी निर्धारित किये जाते हैं और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति निरन्तर प्रयास करता है कुछ भाग्यशाली व्यक्ति होते है जो प्रथम प्रयास में ही लक्ष्य भेद लेते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें लक्ष्य पाने के लिए बार–बार प्रयास करने पड़ते हैं और यदि आदमी प्रयास करे तो सफलता प्राप्त होती ही है जब सफलता नहीं मिलती है तो हमें अवसर भी मिलता है कि हम अपनी विफलता का विश्लेषण करें और जो कमियां प्राप्त हों उन्हें दूर करने का प्रयास करें बहुत सम्भव है कि इस मार्ग में चलते हुए हमारे सपनों को कुछ देर के लिए ठहरना भी पड़े लेकिन यह ठहराव ज्यादा लम्बा नहीं होता है यदि हमें अपने सपनों को पूरा करना है तो निश्चित रूप से हमें भी भावनात्मक रूप से, मानसिक रूप से मज़बूत व परिपक्व भी होना पड़ेगा

समय की गति निरन्तर आगे बढ़ रही है, समय जितना व्यतीत होता जायेगा परिस्पर्धा उतनी ही कठिन होती जायेगी क्योंकि जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां हैं वहां काम भी हो रहा है, शोध भी हो रहे हैं, सरकारी सहयोग व समर्थन भी मिल रहा है, उनके कार्यों का मूल्यांकन भी हो रहा है परन्तु हम इलेक्ट्रो होम्योपैथों को इन सारी व्यवस्थाओं को पार करना है काम भी बहुत करना है शोध के रास्ते ढूंढने हैं, सरकारी सहयोग व समर्थन तो मिल रहा है लेकिन हम उसका उपयोग भी नहीं कर पा रहे हैं और जो कार्य हो रहा है उसका वास्तविक मूल्यांकन नहीं हो रहा है परिणामतः हमारे कार्यों में सुधार नहीं हो पा रहा है एक ही ढर्रे पर चलते रहने का समय कब का गुजर चुका है नित्य नये हो रहे प्रयोगों के मध्य यदि हमें अपनी उपस्थिति रखनी है तो समान्तर तो नहीं परन्तु लगभग कार्य तो करने ही होंगे, साधनों का अभाव नहीं है हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रतिभाओं की कमी नहीं है सिर्फ आवश्यकता है मनोबल के बढ़ाने की, मात्र सपने देखने से काम नहीं चलता सपनों को पूरा करने के लिए अवसर भी हमें ही तलाशने हैं और इन अवसरों का सही उपयोग करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति को मज़बूत करना है जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मज़बूत होने की बात होती है तो हमारे साथी ही कहने लगते हैं कि क्यों सपने दिखा रहे हो ! जबकि तथ्य यह है कि जो सपना देखता है वही आगे बढ़ता है, अपने आस पास मात्र सपनों के जाल बिछाने से काम नहीं चलता काम चलाने के लिए काम करना पड़ता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता या नियमितीकरण दोनों ही स्थिति में सरकार आपके कार्यों को देखेगी और कार्य भी ऐसे हों जिनका कोई प्रतिकूल प्रभाव न हो, सेफ होना दवाओं की गुणवत्ता दर्शाती है और यही गुणवत्ता हमारी प्रमाणिकता है जब रोगी हमारी दवाओं से ठीक होंगे और रोग मुक्त होंगे तो रोगी स्वयं मुक्तकंठ से आपकी और आपकी पद्धति की प्रशंसा करेंगे प्रशंसा के लिए हर वह उपाय हमें करने है जो हमारे बस में है सरकार की नीतियों में बदलाव तो सरकार लाती है।

हमारे बस में इतना है कि हम अपने कार्य से सरकार को इतना प्रभावित कर दें कि सरकार हमारी योग्यता और प्रतिभा को देखकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अपनी स्वास्थ नीति में समाहित करने के लिए विवश हो जाये कहने में तो यह स्वप्न जैसी बात लगती है लेकिन अपने सपनों को धरातल पर यर्थाथ व मूर्तरूप हम और हमारे साथी ही देते हैं।

तो क्यों न हम काम करते हुए हर सपने को पूरा करें।

# आपके जीवन में भी दिवाली अच्छी होगी

परिस्थितियां कुछ भी हों दिवाली एक ऐसा त्योहार है जिसे हर व्यक्ति मनाता है स्मभवतः भारतवर्ष में यही एक ऐसा त्योहार है जिसे हर जाति, हर वर्ग, हर धर्म के मानने वालों द्वारा स्वीकार किया जाता है, सही मायने में दीपावली प्रकाश का पर्व है, उत्साह का पर्व है, इस त्योहार को मनाने के पीछे यह भावना है कि हर व्यक्ति के जीवन में नया उत्साह हो, नई रौशनी हो और जीवन जीने की ललक हो। जीते तो हम सब हैं लेकिन जीना उसी का नाम है जो हँसी खुशी से जिये, स्वयं खुश रहे और अपने कार्यों द्वारा दूसरों को भी खुश रखने का प्रयास करे, कहने सुनने में तो यह बात बहुत अच्छी लगती है परन्तु धरातल पर अच्छी तभी लगती है जब व्यक्ति जिस कार्य में लगा है वह कार्य व्यवस्थित ढंग से चल रहा हो, कार्य करने में किसी प्रकार की कोई भी बाधा न हो एवं अर्थागम भी हो रहा हो।

आज के व्यवहारिक जीवन में यही कटु सच्चाई है, दिवाली तो प्रतीक मात्र है इस प्रतीक के माध्यम से हम प्रेरणा लेने का प्रयास करते हैं कि ऐसी व्यवस्थाओं को जन्म दिया जाये जिससे कि हमारे जीवन का हर पल प्रकाशमय हो तथा दिवाली जैसी चकाचौंध वाली रोशनी हमें आल्हादित करती रहे, यह दिवाली तो गुजर गई,हम सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथ भाईयों ने यह त्योहार खुशी– खुशी मना भी लिया होगा, लेकिन जिस दिवाली का इन्तेजार हम वर्षों से करते आ रहे हैं शायद अभी उस इन्तेजार के समाप्ति की सीमा अभी नहीं आई है, प्रतीक्षा तो बढती ही जा रही है, धीरे–धीरे आँखें पथराती जा रही हैं, हृदय के स्पंदन में भी अनियमितता के स्पष्ट दर्शन होने लगे हैं परन्तु मन है कि मानता ही नहीं, वह अभी भी इस प्रतीक्षा में है कि अवश्य एक दिन आयेगा जब प्रतीक्षा समाप्त होगी और इलेक्ट्रो होम्योपैथों की वास्तविक दिवाली होगी। प्रस्तावना के बाद हमें यह भी समझना जरुरी है कि आखिर वे कौन से ऐसे कारण हैं जो सम्भावनाओं को फलीभूत नहीं होने देते हैं।

जब हम इन कारणों पर एक दृष्टि डालते हैं तो जो कारण सामने आते हैं उनमें कहीं न कहीं अपनी ही कमी नज़र आती है, यदि हम पिछले 20 वर्षों के क्रियाकलाप पर एक दृष्टि डालें तो एकदम स्पष्ट हो जायेगा कि हमने किया क्या है और पाया क्या है ?सही मायने में आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी घटित हुआ है उसके पीछे कभी भी रचनात्मक सोच नहीं रही। 1998 से हमने जो पाने का सिलसिला शुरु किया है वह अभी तक जारी है और आगे भी जारी रहेगा, सन् 1998 में दिल्ली हाईकोर्ट ने जो ऐतिहासिक आदेश दिया यह अकारण ही नहीं आया, जिन महानुभाव ने यह जनहित याचिका लगाई थी उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उत्थान की बात नहीं की थी और न ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये कोई मांग की थी यह तो तत्कालीन समय और परिस्थितियों का ही प्रभाव था जिसके कारण विद्वान न्याय धीश द्वय ने विवेक का पूरा प्रयोग करते हुये नीर–क्षीर की तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वास्तविकता को समझा और इलेक्ट्रो होम्योपैथी में चल रहे धींगा मुश्ती और फैली हुई अराजकता को रोकने के लिये कुछ गाईड लाईन्स दीं जो वस्तुतः लागू हो गई होतीं तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति आज कुछ और ही होती, लेकिन हुआ क्या ?वही ढाक के तीन पात ! इस आदेश पर हमने खुशियां मनाई, जश्न भी मनाये और आदेश पारित होने पर कोई भी व्यक्ति श्रेय लेने से पीछे नहीं रहा, श्रेय लेना चाहिये, प्रयासों का सम्मान भी होना चाहिये, साथ–साथ कार्य पर भी ध्यान देना चाहिये। इसे हम तो विधि की विडम्बना ही कहेंगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबकुछ होता है सिवाय कार्य संस्कृति को जन्म देने के, जब कार्य की बात आती है तो हर अच्छी चीज़ पर नई–नई विसंगतियां निकाल दी जाती हैं जिसका परिणाम यह होता है कि बनती बात भी बिगड़ जाती है। 1998 का आदेश यदि उस समय संचालित होने वाली इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्थाओं के संचालकों द्वारा जरा सा भी इस आदेश के प्रति सकारात्मक रुख अपनाया गया होता और एक जुट हो कर किसी एक राज्य में इस आदेश का अनुपालन करा लिया होता तो शायद 25 नवम्बर, 2003 का जन्म ही नहीं हुआ होता, आपसी खींच–तान, एक दूसरे से बड़ा दिखने की इच्छा, स्वयं ही श्रेष्ठ हैं यह सब–कुछ ठीक है, सब– कुछ करते,पर कम–से–कम किसी एक राज्य में तो इसे लागू करवा देते। तब डिग्री– डिप्लोमा की लड़ाई में ही उलझे रहे, डॉक्टर शब्द के प्रयोग पर आपस में ही चर्चायें करते रहे और जो वास्तविक बिन्दु थे उनको गौण कर दिया। कभी– कभी तो ऐसा भी लगता है कि यह सारे संस्था संचालक बहुत चतुराई से इस आदेश को अनुपालित ही नहीं कराना चाहते थे, इनको शायद यह भय था कि अगर दिल्ली हाईकोर्ट के इस आदेश का अनुपालन हो गया तो सरकारी शिकंजा और कस जायेगा, कभी–कभी मन एक अज्ञात भय से घबड़ाने लगता होगा कि उनके अस्तित्व का क्या होगा ?इसीलिये कानूनी आवरण को लागू करवने से बेहतर समझा कि विषय को ही मोड़ दो ! इसलिये इसे मान्यता की मांग के रुप में विषय को बदल दिया गया। सरकार को बैठे बिठाये अवसर मिल गया और उसने एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन कर दिया जिसे मान्यता के बारे में निर्णय लेना था, कमेटी में चिकित्सा के विभिन्न क्षेत्र के मूर्धन्य विद्वान सम्मिलित किये गये कमेटी ने अपना काम किया, चूँकि कमेटी में सब उच्च स्तरीय मानसिकता के व्यक्ति थे उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी का मूल्यांकन अन्य प्रचलित मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों से तुलनात्मक रुप से किया जब कि सत्यता तो यह है कि अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों के मापदण्डों के अनुरुप इलेक्ट्रो होम्योपैथी कहीं नहीं टिकती। परिणाम क्या हुआ ? 25 नवम्बर, 2003 का आदेश ! इस आदेश में कुछ भी खतरनाक नहीं था पर नियति को कुछ और ही स्वीकार था फलस्वरुप अच्छे खासे आदेश का ऐसा अनुवाद किया गया कि अर्थ का अनर्थ हो गया घटनाक्रम इतनी तेजी से घूमा कि पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में एक भूचाल आ गया और अधोषित बन्दी हो गई। इसे कहते हैं विधि का विधान ऊपर वाले को कुछ और ही स्वीकार है वह इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को कुछ अच्छा ही देना चाहता है तभी उसने हम सब के संयम की परीक्षा ली, कहते हैं कि परिस्थितियां कभी एक सी नहीं रहती हैं यहाँ पर भी यही नियम लागू हुआ और परिस्थितियों ने करवट ली, सात साल के लम्बे इंतजार के बाद आखिरकार भारत सरकार ने यह स्पष्टीकरण दिया कि 25 नवम्बर, 2003 के पत्र में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्रतिबन्धित करने सम्बन्धी कोई प्रस्ताव नहीं था। यह आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए संजीवनी के समान है, जिसने कि मृतप्राय इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नया जीवनदान दिया इस आदेश के आते ही सम्पूर्ण इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में एक नई स्फूर्ति ने जन्म लिया, लोगों ने कहा कि चलो सरकार को सदबुद्धि तो आयी लेकिन यहाँ पर फिर वही कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतिहास है। लगभग हर संस्था संचालक यह दावा करने लगा कि 5–5–2010 का आदेश उन्हीं के प्रयासों से हुआ है एक दूसरे पर शब्दबाण चलने लगे लेकिन कुछ समझदार किस्म के लोग जिनकी संख्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी में काफी कम नजर आती है उन्होंने यह सन्देश दिया कि हर परिणाम किसी न किसी के प्रयासों से सम्भव होता है जिस किसी के भी प्रयास से यह आदेश आया यह धन्यवाद का पात्र है चूँकि यह आदेश मात्र किसी संस्था विशेष के लिए नहीं बल्कि समूचे इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत के लिए है। जब 25 नवम्बर, 2003 का आदेश पूरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर प्रभावी हुआ तो 5–5–2010 का आदेश इसी 25 नवम्बर, 2003 का स्पष्टीकरण है इसलिए यह आदेश भी समूचे इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत पर प्रभावी है।

## अधिकार पाने के लिये ..... प्रथम पेज से आगे

यदि हम आज से 5 साल पहले के इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास पर दृष्टि डालें और देखें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कितनी प्रैक्टिस हो रही है ?समाज में इसे कितना स्वीकारा जा रहा है ? तो इसके आंकलन का सीधा– साधा रास्ता है कि औषधियों की मांग और पूर्ति का अनुपात क्या है ? आज से 5 वर्ष पूर्व तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां चन्द लोग ही बनाते थे, मांग भी बहुत कम थी, इन पांच सालों के अन्दर पूरे देश में एक सैकड़ा से ज़्यादा दवा निर्माण इकाईयां अस्तित्व में आई हैं और हर कम्पनी दावा करती है कि उनकी कम्पनी लाखों का वार्षिक टर्न–ओवर करती है। नित नई कम्पनियां खुलती जा रही हैं यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है, प्रैक्टिस भी बढ़ी है, सीधा सा फण्डा है कि दवा खरीदी जाती है तो व्यवहार में भी लायी जाती होगी। यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लोकप्रियता का स्पष्ट उदाहरण है, हाँ एक बात जरूर है कि आज पीढ़ीयों में टकराव के स्पष्ट दर्शन होते हैं जो पुरानी पीढ़ी के लोग हैं वह परम्पराओं पर विश्वास करते हैं और मैटी के सिद्धान्तों से कोई समझौता नहीं करना चाहते हैं फलतः नई पीढ़ी के लोग कभी कभी ऐसा व्यवहार करने लगते हैं जो कि नई व्यवस्थाओं को जन्म दे देते हैं,अक्सर हमारे साथी यह सवाल करते हैं कि अब नया क्या हुआ ?यह एक ऐसा यक्ष प्रश्न है जिसका उत्तर हर एक को स्वीकार नहीं होता, जीवन में नवीनता तो आती है लेकिन नया पन बार–बार नहीं होता इलेक्ट्रो होम्योपैथी स्थापित हो उसका यथा सम्भव विकास हो शासकीय संरक्षण और ज़्यादा प्राप्त हो हमारे साथियों को भी शासकीय सेवाओं में अवसर मिले यह सारी कि सारी कामनायें तभी फलीभूत होंगी जब पीढ़ियों के बीच वैचारिक समानता जन्म लेगी । अपने विचारों को रखना हर एक का अधिकार है लेकिन अपने ही विचारों को थोपना हर किसी को स्वीकार नहीं होता। नई पीढ़ी की जो बात पद्धति के लिए हितकारी हो जिससे चिकित्सा पद्धति का भला हो ऐसे विचारों को पुरानी पीढ़ी को स्वीकारने में गुरेज नहीं करना चाहिये इसके साथ–साथ नई पीढ़ी का दायित्व है कि वह इतिहास को न बदले क्योंकि इतिहास हमारी धरोहर है धरोहर को सजोना नई पीढ़ी का दायित्व है जब सबका लक्ष्य एक है तो आपसी कटुता के दर्शन क्यों होते है आज जो भी लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े है उनकी यही इच्छा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास हो। इसलिए हमें वही रास्ते ढुढने होंगे जिसपर चल कर हम सब एक नये सुप्रभात का इंतजार करें । कभी भी सम्भावनायें खत्म नहीं होती है कब क्या हो जाये यह हम सब नहीं जान सकते लेकिन इसी विचार में पड़े रहकर कार्य न करें यह भी उचित नहीं है हमें जो अधिकार और जो अवसर प्राप्त है हमें उनका भरपूर उपयोग करना चाहिये और कार्य करते हुए लक्ष्य की प्राप्ति करनी होगी। प्रतीक्षा का समय अब ज्यादा नहीं है जो वर्तमान दृश्य दिखायी दे रहा है वह अच्छाई की ओर संकेत दे रहा है इसलिए अनिर्णय की स्थिति से उबरकर सकारात्मक निर्णय लें और पूरे उत्साह और जोश के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में लग जाये इलेक्ट्रो होम्योपैथी सबकी है इसपर किसी का विशेषाधिकार नहीं है यह अलग बात है कि आज कुछ संस्थाओं को यह अधिकार प्राप्त है लेकिन कार्य करने का अधिकार और कार्य करने के लिए सभी के लिए रास्ते खुले है अधिकार जताने की होड़ में जोश में आकर हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे कि चिकित्सा पद्धति उससे जुड़े चिकित्सक और चिकित्सा पद्धति का लाभ ले रहे व्यक्तियों का नुकसान न हो इलेक्ट्रो होम्योपैथी असीमित है इसको सीमाओं में बाधा नहीं जा सकता ।

अनुसंधान वह क्षेत्र है जिसपर कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को और अधिक जनोपयोगी बनाया जा सकता है इसलिए आईये हमसब मिलकर सकारात्मक विचारो के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करें।

## सलेमपुर देवरिया में एक द्विसीयी निःशुल्क चिकित्सा शिविर

देवरिया इलेक्ट्रो होम्योपैथिक पैथिक स्टडी सेन्टर के संचालक डा0 पी0 के0 श्रीवास्तव के निर्देशन में सलेमपुर देवरिया में निःशुल्क चिकित्सा शिविर में लगभग 70 रोगियों की जाँच की गयी एवं आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियों का वितरण किया गया, शिविर में डा0 पी0 के0 श्रीवास्तव के अतिरिक्त डा0 त्रिज्या राजन, डा0 आसुतोष व सेन्टर के फेकल्स ने भी भाग लिया।

सलेमपुर देवरिया के निःशुल्क कैम्प में बैठे हुये चिकित्सकगण

# केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री इलेक्ट्रो होम्योपैथी के शिविर में

गोरखपुर– स्थानीय चित्रगुप्त मन्दिर परिसर भवन में डी0एल0एम0 मेडिकल स्टडी सेन्टर ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथी महाराजगंज द्वारा एक निःशुल्क शिविर का आयोजन दिनांक 30 अक्टूबर, 2018 को किया गया इस शिविर में केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री माननीय शिव प्रताप शुक्ल की जाँच कर शिविर का शुभारम्भ हुआ।

शिविर में लगभग एक सैकड़ा रोगियों की जाँच करके दवायें दी गयीं। शिविर में मुख्य आकर्षण में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त पूर्व प्राचार्य श्री कमला श्रीवास्तव की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। शिविर को सफल बनाने में मंदिर समिति तथा **D.L.M.** परिवार की डा0 प्रियंका श्रीवास्तव, निशा वर्मा, मधु यादव, शहनाज, ममता, राहुल, आकाश, सन्धया, पूजा, प्रियंका, सुषमा साधना अंकिता, नेहा, नीमा, ज्योति, जीनत, अफतरून, प्रेमनाथ तिवारी, प्रतिमा, असलम, अरविन्द एवं विनय आदि का भरपूर सहयोग रहा। इस प्रकार के शिविरों से जहाँ एक ओर जरूरतमन्दों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो रहा है वहीं सरकार की स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं को भी बल प्राप्त हो रहा है, शिविरों से जनमानस में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को जनप्रिय एवं लोकप्रिय बनने का अवसर भी प्राप्त हो रहा है।

अब शिविर संचालकों एवं सहयोगियों का यह दायित्व बनता है कि वह जनमानस को स्पष्ट तौर पर बतायें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक स्वतन्त्र तथा शीघ्र लाभकारी के साथ साथ हानिरहित चिकित्सा पद्धति है। इसके प्रयोग से किसी प्रकार का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता है।

शिविर का संचालन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक प्रिन्स श्रीवास्तव ने किया।

शिविर में जाँच कराते हुये केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री श्री शिव प्रताप शुक्ल


Board of Electro Homoeopathic Medicine, U.P.
Recognised by Government of U.P.
Approved by Directorate General of Medical & Health Services, U.P.

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

**F.M.E.H.** व **A.C.E.H.** पाठयक्रमों के संचालन हेतु निम्न जनपदों में **स्टडी सेन्टर्स के स्थापनार्थ इच्छुक व्यक्तियों / संस्थाओं से आवेदन आमंत्रित करता है**

इलाहाबाद, कौशाम्बी, बाँदा, चित्रकूट, झाँसी, ललितपुर, आगरा, मथुरा, मैनपुरी, एटा, कासगंज, हाथरस, मेरठ, बागपत, बुलन्दशहर, सहारनपुर, मुजफ्फर नगर, शामली, रामपुर, बिजनौर, अमरोहा, सम्भल, बरेली, बदायूँ, पीलीभीत, हरदोई,सीतापुर, फैजाबाद, सुलतानपुर, श्रावस्ती, बस्ती, गोरखपुर, खलीलाबाद, बलिया, गाज़ीपुर,वाराणासी,चन्दौली,मदोई, औरैया,फर्रुखाबाद एवं कन्नौज आवेदन पत्र एवं निर्देश बोर्ड की वेबसाइट www.behm.org.in (link Affiliation) से डाउनलोड कर सकते हैं।

**Offered Courses**

| Name of the Course | Abbreviation | Eligibility | Duration |
|---|---|---|---|
| Member of Board of Electro Homoeopathic | M.B.E.H. | 10+2 (Bio Group) or Equivalent | Three Years |
| Fellow of Medicine in Electro Homoeopathy | F.M.E.H. | 10+2 (Any Stream) or Equivalent | Two Years (4 Semester) |
| Advance Certificate in Electro Homoeopathy | A.C.E.H. | Registered Practitioner Any Branch or Equivalent | 1 Semester |
| Graduate in Electro Homoeopathic System | G.E.H.S. | 10+2 (Bio Group) or Equivalent | 4 Years Plus (1 Year Internship) |
| Post Graduate in Electro Homoeopathy | P.G.E.H. | Graduate in any Medical Stream or Equivalent | 2 Years |

चित्रगुप्त मन्दिर परिसर गोरखपुर में आयोजित शिविर में चिकित्सकों एवं सहयोगियों का समूह

## परीक्षा फार्म भरने की तिथि घोषित

A.C.E.H. तथा F.M.E.H. की दिसम्बर18 सेमेस्टर की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये सभी फार्म शुल्क सहित 30 नवम्बर, 2018 तक बोर्ड कार्यालय मे जमा कराना सुनिश्चित करें तथा F.M.E.H./A.C.E.H. के ऐसे परीक्षार्थी जो किन्हीं कारणवश सितम्बर 2018 की परीक्षा में सम्मिलित न हो पायें हों वे दिसम्बर 2018 की परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। यह जानकारी बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के रजिस्ट्रर डा0 अतीक अहमद ने दी।

डा0 अहमद ने बताया कि परीक्षा कार्यक्रम की तैयारी कर ली गई है शीघ्र ही प्रकाशन विभाग प्रकाशित करेगा।